जिसमें मनुष्य, पशु, वृक्ष आदि लिखते हैं तथा एक वेदिका अभ-रक अथवा मट्टी की अलग बनाते हैं। इस चित्र व वेदिकाकी पूजा घरके कुटुम्बी ८ दिन पहलेसे करते हैं परन्तु अज्ञानता वश वे इसका कुछभी भेद नहीं समझकर उस भीत के चित्रको होई देवी और वेदिकाको हटरी कहकर उसके आगे केवल हाथ जोड़ते हैं और अक्षत छोड़ते हैं। इसी अज्ञानता वस धन तेरसके दिन चांदी सोनेके सिक्कोंको लक्ष्मी मान उसकी पूजा करते हैं तथा श्री महावीर स्वामीकी अपूर्व समवशरण लक्ष्मीको भूल जाते हैं। दीवालीके दिन श्री महावीर स्वामीके निर्वाणकी पूजा करके जो लड्डू, गोला व अन्य नैवेद्य श्री मंदिरजीमें चढ़ाते हैं सो तो ठीक है परन्तु सायंकालको मट्टीके हस्तिमुख गणेश और लक्ष्मी-की पूजा करके उस दिनको मंगल मानते हैं और उस समय अपनी २ दूकानोंपर "श्री गणेश लक्ष्मी देव्यैनमः" ऐसा लिखते हैं और अपनी हिसाब कितावकी नवीन वहियोंको शुरू करते हैं। अज्ञानता वश और कुसंगतिके कारण हम यह भूल जाते हैं कि यह गणेश लक्ष्मी कौन हैं और उनकी पूजन आज क्यों मंगलदायक मानी जाती है। भाइयों! यह गणेश वही गौतम स्वामी हैं जो मुनि गणोंके ईश अर्थात् स्वामी होनेसे गणेश कहलाते थे। इनका मुख हस्तीकासा नहीं था परंतु जैसे महात्माओंका होता है वैसा था और यह लक्ष्मी देवी वही उनकी केवलज्ञानरूप लक्ष्मीदेवी है जिसके साथ गौतम गणेशका उसी दिन सम्बन्ध हुआ था कि जिस दिन हम गौतम गणेश और लक्ष्मीकी पूजन करते हैं। समयके फेरसे हम यथार्थ बातको भूल बैठे और सम्यक् पूजाके स्थानमें

मिथ्या पूजा करने लगे। भाइयोंको विदित हो कि, मंगल शब्दका मतलब यही हैं कि जिससे पापका नाश हो और पुण्यकी प्राप्ति हो इसलिये जो मंगलरूप है उसका स्मरण तथा पूजन करना उचित है अर्थात् अपनी श्रद्धाके अनुकूल यथार्थ देवगुरु शास्त्रका ही नामस्मरण तथा पूजनसे अपना कल्याण हो सक्ता है।

अब हम नीचे जो विधि लिखते हैं उस प्रकार हमारे भाइयोंको वर्तना चाहिये:—

आठ दिन पहले जो भीतमें चित्र व हटरीकी वेदिका रखनेकी प्रथा है इसके करनेकी कोई जरूरत नहीं है। उसके स्थानमें श्री महावीर स्वामीका पूजन श्री जैन मंदिरजीमें नित्य करना तथा सुनना चाहिये। जो स्त्री और बालकोंके मोद अर्थ चित्रादि बनानेकी प्रथा दूर न हो सके तो रहने दी जाय परन्तु उन चित्रादिकोंकी पूजन करनेकी जरूरत नहीं है। अपने कुटुम्बको धीरे २ सम्यक् मार्गपर लानेके लिये ऐसा किया जाय तो कुछ हर्ज नहीं है कि, भीतके चित्र व वेदिकाके आगे १ ऊंची चौकी पर १ छोटीसी थालीमें केशर व रोलीसे ॐ शब्द लिखा जाय और उसके आगे एक दूसरी थाली उसके कुछ नीचे छोटी चौकी पर रक्खी जाय जिसमें साथिया बनाया जाय तथा एक थाली में अष्टद्रव्य तय्यार रक्खे जांय जैसे जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल और सर्व कुटुम्बके स्त्री पुरुष बैठकर श्री महावीर स्वामीकी पूजा पढ़ैं (जो आगे लिखी हुई है) और उस साथिये की हुई थालीमें चढ़ावैं। पश्चात् सब एक दूसरेकी सुश्रूषा करैं तथा मिठाई खावैं।

धनतेरसके दिनभी इसी प्रकार पूजन करनी चाहिये और पूजनके पश्चात् नए वर्तनोंमें परस्पर भोजन पान करना चाहिये।

इस अष्टद्रव्यसे पूजन करनेमें आध घंटासे आदा नहीं लगेगा।

परन्तु जो इतनी भी थिरता न हो तो अष्टद्रव्य थोडे बनाकर सबके अर्घ बनाने चाहिये और समस्तको एक २ अर्घरकावीमें व हाथमें देकर नीचे लिखी स्तुति पढ़कर चढ़ाना चाहिये।

जल फल वसु सजि हिमथार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊं भव दधितार, पूजत पाप हरों।
श्रीवीर महा अतिवार सनमति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर सनमतिदायक हो॥
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फिर सब जने एक दूसरेकी सुश्रूषा कर मिठाई आदि खावें।

इस प्रकार नित्य करें, दीवालीके दिन जब अपनी बहियोंको लिखना शुरू करना हो तब नीचे लिखे भांति करना चाहिये—

एक ऊंची चौकीपर एक थाल रखकर उसमें शब्द ॐ लिखना चाहिये तथा उसीके आगे एक जैन शास्त्र व पुस्तक विराजमान करना चाहिये यदि जैन शास्त्र व पुस्तक न मिले

तो ॐ के नीचे **श्री जिनसारदाय नमः** ऐसा लिखना चाहिये। आगे छोटी चौकीपर एक साथिया बनाकर उसे बड़ी चौकीके आगे रखना चाहिये—तथा अष्ट द्रव्य तय्यार रखकर पूजन करना चाहिये। जो कुटुम्बमें बडा पुरुष हो व दूकानका मालिक हो वह अपना मन, वचन, काय ठीक करके पूजन करै अन्य सर्व जन थिरतासे देखैं और सुनैं।

प्रथम वही श्री महावीर स्वामीकी पूजा करनी चाहिये तथा यदि थिरता कम हो तो ऊपर लिखा हुआ केवल अर्घ्यमात्र पढ़कर चढ़ाना चाहिये पश्चात् नीचे लिखी श्री सरस्वती पूजा करनी चाहियेः—सरस्वती पूजाके समय श्री शास्त्र व पुस्तकके बांधने योग्य एक वेष्टन व १ शुद्धवस्त्र भी चढ़ानेको रखना चाहिये। श्री महावीर स्वामी और सरस्वतीकी दोनों पूजा करते समय जब जयमाल पढ़ी जाय तब सर्व अपने सम्बन्धियोंको जो पासमें बैठे हों अर्घ देना चाहिये। तथा पूजा खूब ललित ध्वनिसे पढ़ी जानी चाहिये। पूजन हो चुकनेके पश्चात् अपनी २ वहियोंमें प्रथमही साथिया बनाकर इस भांति लिखना चाहियेः—

“श्री महावीर स्वामिने नमः,” “श्रीगौतम गणेशायनमः,” “श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यनमः,” “श्री केवल ज्ञानलक्ष्मी देव्यैनमः”॥

पश्चात् वीर सम्वत् और विक्रमसंवत् आदि लिखकर मिती लिखनी चाहिये। तथा अपनी दूकानोंके दरवाजोंपर भी इसी भांति वाक्य केशर व सिंदूर आदिसे लिखे यदि जगहं कम हो

तो तीन, दो व एक लिखे फिर अपनी यथाशक्ति दान करै तथा कमसेकम एक जैन शास्त्रको प्रकाश करने व जीर्णोद्धार करनेका संकल्प करै। जो छोटा व्यापार हो तो जैन शास्त्रोद्धारमें एक रुपया, दो रुपये, चार रुपये अपनी शक्तिअनुसार देवै। तथा अन्य व्यापार व कुटुम्बके सम्बन्धियोंका रुपया पैसा मिठाई आदिसे सत्कार करै। दीपमालिकाके तीन चार दिनोंमें बड़ा उत्सव मानै। मित्रोंको संतोपित करै। परन्तु इस उत्सवमें भांग पीने, जूआ खेलने, आतसवाजी (दारूखाना छोड़ने) व अन्य अनीति करनेका सर्वथा त्याग करै। जैनियोंके लिये यह दिवस परम पवित्र और धर्म ध्यान करनेके योग्य है न कि पाप और अन्याय सेवनके लिये। ऊपर लिखे भांति दीपमालिकाकी पूजा करनी चाहिये और उत्सव मनाना चाहिये। जो ब्राह्मण व पुरोहित आपके यहां पूजा कराने आते हों उनको यह पुस्तक देकर इसी भांति पूजा पढ़वानी चाहिये। तथा बीच २ में पैसा नहीं चढ़वाना चाहिये और जो वे पढ़नेसे इनकार करैं तो उनको प्रार्थना करना चाहिये कि वे केवल देखते रहें। ब्राह्मणोंको जितनी उपज इस पूजासे पैसे चढ़ाने आदिसे होती है वह सर्व ध्यानमें लेकर उससे अधिक देकर उनको संतोषित रखना चाहिये। परन्तु जो वे द्वेष प्रगट करैं तो ऐसे पक्षपाती ब्राह्मणोंसे सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये। यदि हमारे भाई इस भांति इस उत्सवको मनाएंगे तो उनके परिणाम निर्मल होंगे और उनको पुण्यका बंधन होगा।

मुंबई
मिती व. ८।११।२४३९ } सीतल प्रसाद.

अथ श्री महावीर पूजा कवि मनरंगकृत लिख्यते—

छंदगीता ॥ शुभनगर कुंडलपुर सिद्धारथरायके त्रिशला-तिया ॥ तजि पुष्पउत्तर तासु कुक्ष्या वीर जिन जन्मन लिया ॥ कर सात उन्नत कनक सा तनु वंशवरइक्ष्वाक है ॥ द्वै अधिक सत्तरि वरस आउप सिंघचिन्ह भला कहै ॥ १ ॥ छंद मालिनी ॥ सो जिनवीर दयानिधिके जुग पाद पुनीत पुनीत करैंगे । व्याधि मिटायभवोदधिकी गुणगावत गावतपार परैंगे ॥ जावत मोक्षन होय हमैंशुभ तावत थापन रोज करैंगे ॥ आय विराजहुनाथ इहां हम पूजिकेपुण्य भंडार भरैंगे ॥ ॐ ह्रीं श्रीवीरनाथ जिनेंद्राय पुष्पांजलिं क्षिपेत् (ऐसा पढ़कर पुष्पोंको थालीमें डाले)

अथ अष्टक

छंदद्रुतविलंबित

कनक कुंभसुवारि भरायकै ॥ विमल भावत्रिशुद्ध लगायकै ॥
चरमदेव जिनेश्वर वीरके ॥ चरण पूजत नाशक पीरके ॥

ॐ ह्रीं श्रीवीरनाथ जिनेंद्राय जन्मजरारोग विनाशनायजलं निर्वपामीतिस्वाहा ॥ जलं ॥ १ ॥

(यह पढ़कर जलको चढ़ावै.)

परम चंदनसीतल वामना ॥ करि सुकेशरि मिश्रित पावना ॥ चरमदेव० ॥ चरणपूजत० ॥ ॐ ह्रीं श्रीवीरनाथ जिनेंद्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ चंदनं ॥ २ ॥

(यह पढ़कर केशर चंदन चढ़ावै.)

धवल अक्षत चाव बढ़ावही ॥ करिसुपुंज महामन भावही ॥ चरमदेव०। चरणपूजत०॥ॐ ह्रीं श्री वीरनाथ जिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

(यह पढ़कर स्वेत अक्षत चढ़ावै)

पुहप माल बनायहिरायकै ॥ जुगतिसो प्रभु पास लियायकै ॥ चरमदेव० ॥ चरणपूजत० ॥
ॐ ह्रीं श्रीवीरनाथ जिनेंद्राय कामबान विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

(यह कहकर पुष्प चढावै)

नवल घेवरबावर लायकै ॥ घृतसुलोलित पूव बनायकै ॥ चरमदेव० ॥ चरणपूजत० ॥ ॐ ह्रीं श्रीवीरनाथ जिनेंद्राय क्षुधारोगनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥

(यह पढकर नैवेद्य चढावै)

करि अमोलक रत्नमई दिया ॥ जगत ज्योति उद्योतमई किया ॥ चरमदेव० ॥ चरणपूजत ॥

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथ जिनेंद्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ दीपं ॥ ६ ॥

(यह पढ़कर दीप (कपूर) चढ़ावै)

उठत धूम्र घटावलिजासुते ॥ इम सुधूप सुगंधित तासुते ॥ चरमदेव० ॥ चरणपूजत० ॥ ॐ ह्रीं श्रीवीरनाथ जिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ धूपं ॥७॥

(यह पढ़कर धूप अग्निमें क्षेपण करै)

फणसदाड़िम आम्रपके भये ॥ कनक भाजनमें भरिकेलये ॥ चरमदेव० ॥ चरणपूजत० ॥ ॐ ह्रीं श्रीवीरनाथ जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ फलं ॥ ८ ॥

(यह पढ़कर बादामआदि फल चढ़ावै)

अरघलै शुभ भाव चढ़ायकै ॥ धवल मंगलतूर बजायकै ॥ चरमदेव० ॥चरणपूजत०॥ ॐ ह्रीं श्रीवीरनाथ जिनेंद्राय सर्वसुखप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ अर्घं ॥८॥

(यह पढ़कर आठों जलचंदनादि द्रव्योंका अर्घ बनाकर चढावै)

अथपंचकल्याणकं ॥ छंदगाथा ॥

मास अषाढ़ सुदीमें । षष्ठीदिन जानि महा सुखकारी ॥
त्रिसला गरभ पधारे । तुमपद जजत अर्घसीधारी ॥

ॐ ह्रीं श्रीवीरनाथ जिनेंद्राय आषाढ़ सुदी छठ गर्भकल्याणकाय अर्घं ॥१॥

(यह पढ़कर अर्घ चढाना चाहिये)

चैत्रत्रयोदशिकारी ॥ तादिनजनमे प्रभावविस्तारी ॥
अर्घं महाकरधारी ॥ जजततिहारे चरणहितकारी ॥

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथ जिनेंद्राय चैत्रसुदीतेरसजन्मकल्याणकाय अर्घं ॥२॥

(अर्घ चढ़ावै)

दशमी अगहन वदिमें ॥ लखि सबजग अथिर भये वैरागी ॥
प्रभूमहाव्रत धारै ॥ हम पूजत होत वड़ भागी ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवीरनाथ जिनेंद्राय अगहनवदी दसमी तपकल्याणकाय अर्घं ॥ ३ ॥

(अर्घ चढ़ावै)

केवल ग्यानीहूवे ॥ दशमी वैसाख सुदीके माही ॥
सकल सुरासुर पूजै ॥ हम इह पद लखि अरघ चढ़ाही ॥

ॐ ह्रीं श्रीवीरनाथ जिनेंद्राय वैशाखसुदी दशमी

ज्ञान कल्याणकाय अर्घं ॥ ४ ॥

(अर्घ चढ़ावै)

कार्तिक नष्टकलादिन ॥ पावापुरके गहनते स्वामी ॥
मुकति तिया परनाई ॥ हम चरण पूजि होत वड़ नामी ॥

ॐ ह्रीं श्रीचरमदेवमहावीर जिनेंद्राय कार्तिकवदी अमावस निर्वाण कल्याणकाय अर्घं ॥५॥

(अर्घ चढ़ावै)

॥ अथजयमाला ॥ (सबको अर्घ देना चाहिये)

॥ छंद झूलना ॥

वीर जिन धीरधर सिंहपग चिन्ह धर तेजतप धरन जय-सूर भारी ॥ धर्म्मकी धुराधर अक्षर विनुगिराधर परमपद धरन जयमदन हारी ॥ दयाधर सीमधर पंचवरनाम धर अमल छवि धरण जय सरमकारी ॥ पंचपरवर्तकी भर्मना ध्वंसिकै अचलपद लहत जयजसविथारी ॥

छंद त्रोटक

जय आनंदके घनवीर नमो ॥ जय नाशक हौ भवभीरनमो ॥
जयनाथ महासुखदायक हौ ॥ जमराजविहंडनलायकहौ ॥२॥
जय चरमशरीरगंभीर नमो ॥ जय चर्मतिथंकर धीर नमो ॥
जयलोक अलोक प्रकाशक हौ ॥ जन्मान्तरके दुखनाशक हौ॥३॥
जय कर्मकुलाचलछेद नमो ॥ जय मोहविना निरखेदनमो ॥४॥
जयपूज्यप्रताप सदा सुथिरा ॥ प्रगटी चहुं ओर प्रशस्तगिरा॥४॥

तन सात सुहाथ विसालनमो ॥ कनकाभ महा दशतालनमो ॥
शुभमूरति मोमन माझवसी ॥ सिगरी तवतेभवभ्रांतिनसी॥५॥
जय क्रोधदवानल मेघनमो ॥ जय त्यागकरो जगनेहनमो ॥
जय अंबर छाड़ि दिगंवर भे ॥ गति अंवरकी धरि अम्मरभे॥६॥
जय धारक पंच कल्याण नमो ॥ जय रोजनमैं गुणवाननमो ॥
जय पाद गहे गणराज रहैं ॥ सचिनायकसे मुहताज रहैं ॥७॥
जय भौदधि तारण सेत नमो ॥ जय जन्म उधारनहेत नमो ॥
जय मूरति नाथ भली दरसी॥ करुणामय शांति छया करसी॥८॥
जय सार्थिक नामसुवीरनमो ॥ जय धर्मधुराधरवीरनमो ॥
जय ध्यान महानतुरी चढ़के ॥ शिवखेत लियो अतिही वढ़के॥९॥
जय पारनवार अपारनमो ॥ जय मारविना निरधार नमो ॥
जयरूपरमाधर तो कथनी ॥ कथिपारन पावत नागधणी ॥१०॥
जयदेव महा कृतकृत्यनमो ॥ जयजीवउधारण वृत्यनमो ॥
जय अन्नविना सव लोक जई ॥ ममता तुमते प्रभुदूरगई ॥ ११ ॥
जय केवल लब्धिनवीननमो ॥ सववातनमें परवीननमो ॥
जय आत्ममहारस पीवन हो ॥ तुमजीवनमूल सजीवन हो ॥१२॥
जय तारणदेव सिपारसमो ॥ सुनि लेचित दै इहवार समो ॥
दुखदूखित मोमनकीमनसा ॥ नहि होत अराम इकौक्षणसा ॥१३॥
तकि तो पद भेषजनाथ भले ॥ तुमपास गरीब निवाज चलै ॥
मनकी मनसा सव पूजनको ॥ तुमही इहि लायकदूजनको ॥१४॥
इह कारजके तुम कारण हो ॥ चित ल्याय सुनो तुम तारणहो ॥
जगजीवनके रखपाल भलै ॥ जय धन्यधन्य किरपालमिले॥१५॥
सवमो मनकी मनसापुजि हैं । अब और कुदेव नहीं सुझि हैं ॥
सुझि है तुमरे गुन गामनकी ॥ बुझि है तृष्णा भरमावनकी ॥१६॥

घत्ता ॥ छंद काव्य ॥

पूरन यह जयमाल भई अंतिम जिनकेरी ॥
पढ़त सुनत मनरंगकहै नासिहै भवफेरी ॥
वसि है शिवथल माहिं जहां काया नहिं हेरी ॥
ज्ञानमई भगवान जाय व्है है गुणढेरी ॥१७॥
हरौ मोह तमजाल हाल शिवबाल निहारौ ॥
हारौ मिथ्याचाल नाल चउ किति पसारौ ॥
सारौ कारज वेस लेस सममान न धारौ ॥
धारौ निजगुण चित्त मित्त जिनराज पुकारौ ॥१८॥
मरौ नएकौ काल माल विधाकी डार्‍यो ॥
डारौ औगुण भार भारदुनियावी जार्‍यो ॥
जारौ नहिं निजरीति प्रीति दुर्गतिकी मार्‍यौ ॥
मारौ सननिवि होउ दोहरंचकन विचार्‍यो

(यह पढ़कर जयमालका अर्घ चढ़ावै)

(छंद छप्पै)

होहु अनंगसरूप भूपको पद विस्तार्‍यो ॥
तारो अपनकुलै भुलै मद मायाटार्‍यो ॥
टारहु नहि निज आनि वांनि ममताकी गार्‍यो ॥
गारौनाकुलकानि जानिकै मदन प्रहार्‍यो ॥
मनरंग कहत धनधान्य अरु पुत्रपौत्र करि घरभरौ ॥
श्री वीरचंद जिनराजते तुमको यह कारजसरौ ॥ २० ॥

(इति आशीर्वादः)

(यह पढ़कर पुष्प चढ़ावै)

श्री सरस्वती पूजा नीचे लिखे भांति करै.

श्री शारदास्तुति

भुजंग प्रयात छंद

जिनादेश जाता जिनेन्द्रा विख्याता ।
विशुद्धा प्रबुद्धा नमो लोक माता ॥
दुराचार दुर्नेहरा शंकरानी ।
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥ १ ॥
सुधा धर्म संसाधनी धर्मशाला ।
सुधाताप निर्नाशनी मेघमाला ॥
महा मोह विध्वंसनी मोक्षदानी ।
नमो देविवागेश्वरी जैन वाणी ॥ २ ॥
अखै वृक्षशाखा व्यतीताभिलाखा ।
कथा संस्कृता प्राकृता देश भाषा ॥
चिदानंद भूपालकी राजधानी ।
नमो देवि वागेश्वरी जैन वाणी ॥ ३ ॥
समाधानरूपा अनूपा अछुद्रा ।
अनेकान्त धा स्याद्वादांकमुद्रा ॥
त्रिधा सप्तधा द्वादशांगी वखानी ।
नमोदेवि वागेश्वरी जैन वाणी ॥ ४ ॥
अकोपा अमाना अदंभा अलोभा ।
श्रुतज्ञानरूपी मति ज्ञान शोभा ॥
महा पावनी भावना भव्यमानी ।
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥ ५ ॥

अतीता अजीता सदा निर्विकारा।
विषैवाटिका खंडिनी खड्गधारा॥
पुरा पाप विक्षेप कर्तृ कृपानी।
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥६॥
अगाधा अबाधा निरंध्रा निराशा।
अनंता अनादीश्वरी कर्मनाशा॥
निशंका निरंका चिरंका भवानी।
नमो देवि वागेश्वरी जैन वाणी॥७॥
अशोका मुदेका विवेका विधानी।
जगज्जंतु मित्रा विचित्रावसानी॥
समस्तावलोका निरस्ता निदानी।
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥ ८॥

(इतना पढ़कर थालीमें पुष्प चढ़ावै)

सरस्वती पूजा भाषा

दोहा।

जन्मजरा मृति क्षय करै, हरै कुनय जड़रीति।
भवसागरसों लेतिरै, पूजे जिनवच प्रीति॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनि! प्रतिपुष्पांजलिं क्षपेत्

(यह पढ़कर थालीमें पुष्प क्षेपण करे)

अथ अष्टक।

छंद त्रिभंगी।

छीरोदधि गंगा, विमल तरंगा, सलिल अभंगा, सुखसंगा।
भरि कंचन झारी, धारनिकारी, तृषा निवारी, हितचंगा॥
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञान भई।
सो जिनवर वाणी, शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी, पूज्य भई,
॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ जलम्॥ (जल चढावै)

करपूर मंगाया, चन्दन आया, केशर लाया रंग भरी। शार-
दपद वंदौं, मन अभिनंदौं, पाप निकंदौं दाहहरी॥
॥ तीर्थंकर० ॥ सो० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥ चंदनम्॥ (चंदन चढावै)

सुखदास कमोदं, धार प्रमोदं, अति अनुमोदं चंद समं।
वहु भक्ति वढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई, मातममं॥ तीर्थंकर०॥
॥ सो० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥अक्षतम्॥ (श्वेत अक्षत चढ़ावै)

वहुफूल सुवासं, विमल प्रकाशं, आनंद रासं, लाय धरै

ममकाम मिटायो, शील बढ़ायो, सुख उपजायो, दोषहरै।
॥ तीर्थंकर० ॥ सो० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ पुष्पम् ॥ (पुष्प चढ़ावै)

पकवान बनाया, बहु घृतलाया, सब विधि भाया, मिष्टमहा।
पूजूं, थुति गाऊं, प्रीति बढाऊं, क्षुधा नशाऊं, हर्ष लहा॥
॥ तीर्थंकर० ॥ सो० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ नैवेद्यम् ॥ (नैवेद्य चढ़ावै)

करि दीपकज्योतं, तमक्षय होतं, ज्योति उद्योतं, तुमहिं चढै
तुमहो परकाशक, भरमविनाशक, हम घट भासक ज्ञानबढ़ै॥
॥ तीर्थंकर ० ॥ सो० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ दीपम् ॥ (दीप चढ़ावै)

शुभगंध दशोंकर, पावकमें धर, धूपमनोहर खेवत हैं॥ सब पाप जलावैं, पुण्य कमावैं, दास कहावैं सेवतहैं ॥ तीर्थंकर०
॥ सो० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ धूपम् ॥ (धूप अग्निमें डालै)

बादाम छुहारी, लौंग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावत हैं।
मन वांछितदाता, मेट असाता, तुमगुनमाता गावत हैं ॥
॥ तीर्थंकर० ॥ सो० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै फलम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ फलम् ॥ (फल चढ़ावै.)

नयनन सुखकारी, मृदुगुण धारी, उज्वल भारी, मोलधरै ॥
शुभगंधसह्मारा, वसनानिहारा, तुमतर धारा, ज्ञान करै ॥
॥ तीर्थंकर० ॥ सो० ॥९ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै वस्त्रम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ वस्त्रम् ॥ (श्री शास्त्रजी व पुस्तकमें बांधनें योग्य वेष्टन व कपडा चढ़ावे)

जल चंदन अक्षत, फूल चरोंचत, दीप धूप अति फल लावैं ॥
पूजाको ठानत, जो तुम जानत, सोनर द्यानत, सुखपावैं ॥
तीर्थंकर० ॥ सो० ॥१० ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ अर्घम् ॥ (आठों द्रव्यका अर्घ चढावे) (सबको अर्घ देवै)

अथ जयमाला ।

सोरठा ।

ॐकार धुनिसार, द्वादशांगवाणी विमल ।
नमौं भक्ति उरधार, ज्ञानकरै जडता हरै ॥ २ ॥

बेसरी छंद

पहला आचारांग बखानो । पद अष्टादश सहस प्रमानो ॥
दूजा सूत्रकृतं अभिलाषं । पद छत्तीस सहस गुरुभाषं ॥१ ॥

तीजा ठाना अंग सुजानं । सहस नियालिस पदसरधानं,
चौथो समवायांग निहारं ॥ चौसठ सहस लाखइक धारं ॥२॥
पंचम व्याख्याभगपति दरशं ॥ दोयलाख अट्ठाइस सहसं ॥
छट्ठा ज्ञातृकथा विसतारं ॥ पांचलाख छप्पन्न हजारं ॥
सप्तम उपासका ध्ययनंगं । सत्तर सहस ग्यारलख भंगं ॥
अष्टम अंत कृतं दस ईसं । सहस अट्ठाइस लाख तेईसं ॥४॥
नवम अनुत्तर अंग विशालं । लाख बानवैं सहसच वालं ॥
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं । लाख तिरानवें सोल हज़ारं ॥५॥
ग्यारम सूत्रविपाक सो भाखं । एक कोड़ चौरासी लाखं ॥
चार कोड़ी अरु पंद्रह लाखं । दोहजार सब पद गुरुशाखं॥६॥
द्वादश दृष्टि वाद पन भेदं । इकसौ आठ कोड़ि पद वेदं ॥
अठसठलाख सहस छप्पन हैं । सहित पंचपदमिथ्याहन हैं ॥७॥
इकसौ बारह कोड़ि वखानं । लाख तिरासी ऊपर जांनं ॥
अठावन सहसं पंच अधिकाने । द्वादश अंग मात्र पद माने ॥८॥
इकावन कोड़ि आठ ही लाखं । सहस चुरासी छहसौ भाखं ॥
साढ़े इकीस शिलोक बनाये । एक एक पदके ये गाये ॥९॥

धत्ता

जा बानीके ज्ञानसो, सूझै लोकाऽलोक ॥
'द्यानत' जगजयवंत हो सदा देतहूं धोक ॥१ ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भतसरस्वत्यै देव्यै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(सब महाअर्घको चढ़ा देवैं.)

वस्तु छंद

जैनवाणि जैनवाणि सुनहि जे जीव ।
जे आगम रुचि धरैं जे प्रतीति मन माहिं आनहिं ॥
अवधारंहिं जे पुरुष समर्थ पद अर्थहि जानहिं ॥
जे हित हेतु बनारसी, देहिं धर्मउपदेश ॥
ते सब पावहिं परम सुख । तज संसार कलेश ॥

इति आशीर्वादः

(ऐसा पढ़कर थालीमें पुष्प चढ़ावै.)

इति सरस्वती पूजा समाप्ता.